Lecture Notes

Lecture (8)

M.A. 1st Sem

Unit – 4

Topic –

Personality Assessment

(Word Association Test – WAT)

(शुंग का शब्द साहचार्य जाँच)

Dr. Kumari Sadhana Prasad

Associate Prof.

Dept. of Psychology

Word Association Test — WAT (युंग का शब्द साहचर्य जाँच) :—

इस जाँच में संवेगात्मक शब्दों और असंवेगात्मक अथवा तटस्थ शब्दों की मिली-जुली एक सूची तैयार की जाती है। दोनो प्रकार के शब्दों की संख्या बराबर-बराबर रखी जाती है। व्यक्ति के सम्मुख प्रत्येक शब्द को एक-एक कर बारी-बारी से उपस्थित किया जाता है तथा व्यक्ति प्रत्येक शब्द को सुनने के तुरंत बाद ही प्रत्युत्तर में उस शब्द को बोलता है, जो सबसे पहले उसकी चेतना में आते हैं। प्रत्येक शब्द को सुनने के बाद व्यक्ति कितनी देर में अपना प्रत्युत्तर देता है तथा प्रत्युत्तर के रूप में जो शब्द बोलता है उसे नोट कर लिया जाता है। सूची के प्रत्येक शब्द को एक बार प्रस्तुत कर लेने के बाद दुबारा उन शब्दों को पहले की ही तरह प्रस्तुत किया जाता है। दुबारा शब्दों को प्रस्तुत करने का उद्देश्य यह होता है कि व्यक्ति पहले दिए गए शब्दों को ठीक-ठीक बोल पाया है या नहीं — इसकी जाँच हो सके।

व्यक्ति कुछ संवेगात्मक शब्दों को सुनने के तुरंत बाद अपना प्रत्युत्तर देता है, तो कुछ शब्दों को सुनने के बाद प्रत्युत्तर देने में विलंब करता है। सूची में से सुनाए जानेवाले शब्दों को उत्तेजना शब्द कहते हैं तथा उनके प्रति व्यक्ति का जो प्रत्युत्तर होता है, उसे प्रतिक्रिया शब्द कहते हैं। इस प्रकार, विभिन्न उत्तेजना

शब्दों के प्रति व्यक्ति द्वारा दिए गए प्रतिक्रिया शब्दों के बीच, जो समय व्यवधान होता है, उसकी गणना करके व्यक्ति के व्यक्तित्व का विश्लेषण किया जाता है, जिसके आधार पर संतुलन-विसंतुलन, संवेगात्मकता, प्रतिक्रिया आदि गुणों की परख की जाती है।

इस परीक्षण के उपयोग का श्रेय Jung (1918) को जाता है, जिन्होंने 100 शब्दों की एक सूची बनाकर व्यक्ति की संवेगात्मक समस्याओं को समझने का प्रयोग किया है। Jung के अतिरिक्त Freud ने भी व्यक्तित्व की परख के लिए इस विधि को महत्वपूर्ण बताया है।

Jung के समय ही Kent (केंट) & Rosanoff (रोजेनॉफ) (1910) ने भी इस तरह का एक परीक्षण (WAT) बनाया है, जिसका उपयोग सामान्य एवं मनोस्नायु विकृति (Psychosis) के रोगियों के व्यक्तित्वों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए किया जाता है। परन्तु युंग की तुलना में यह परीक्षण उतना लोकप्रिय नहीं है। नैदानिक क्षेत्रों में यह एक अत्यंत ही उपयोगी परीक्षण सिद्ध हुआ है। इसका उपयोग मनःचिकित्सा से मानसिक रोगियों के स्वास्थ्य-सुधार का मूल्यांकन करने, उनकी संवेगात्मक समस्याओं को समझने तथा विभिन्न मनःस्नायुरोगों के लक्षणों के अध्ययन के लिए विशेष महत्व रखता है।

व्यक्तित्व माप की यह विधि सरल भी है जिसका उपयोग साधारण प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति भी सफलतापूर्वक कर सकता है।

वाक्य-पूर्ति जाँच (Sentence Completion Test – SCT)

प्रक्षेपण-प्रविधि के रूप में अनेक मनोवैज्ञानिकों ने वाक्य-पूर्ति जाँच का भी निर्माण किया है। इस जाँच में कुछ अधूरे वाक्य होते हैं, जिसे व्यक्ति शब्द-सामर्थ्य द्वारा पूरा कर अपने मनोभावों, मनोवृत्तियों, प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं, प्रेरणाओं आदि को प्रक्षेपित या आरोपित करता है। इस तरह के परीक्षणों का प्रयोग टेंडलर (Tendler 1930) रोडे एवं हिल्डरेथ (Rohde & Hildreth 1945) लिंडजे (Lindzey 1961) फोरर (Forer 1950) आदि ने सफलतापूर्वक किया है।

Forer (1950) ने 100 पदों का एक ऐसा परीक्षण बनाकर व्यक्तित्व-संबंधी कुछ विशेषताओं, जैसे - चिंता, आक्रमण, इच्छाओं पारस्परिक संबंध आदि का अध्ययन किया है।

मूल्यांकन (Evaluation) —

व्यक्तित्व की परख के लिए यह एक उपयोगी परीक्षण है। लेकिन, इस तरह के परीक्षण से व्यक्तित्व के कुछ खास पहलुओं का ही अध्ययन संभव है, संपूर्ण व्यक्तित्व का नहीं। वाक्य-पूर्ति जाँच तैयार करने में कई प्रकार की व्यावहारिक एवं तकनीकी कठिनाइयाँ भी हैं, अतः इसका निर्माण कुशल एवं दक्ष वैज्ञानिक ही कर सकते हैं।